संपादकीय

मिलकर काम करें

केंद्र सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक के बीच पिछले कुछ समय से तीखा हो चला तनाव फिलहाल खत्म हुआ सा लग रहा है। दोनों पक्षों ने परिपक्वता का परिचय देते हुए विवादित मुद्दों के समाधान का रास्ता खोजने की कोशिश की है। एक विशेषज्ञ समिति यह तय करेगी कि रिजर्व बैंक के पास पूंजी का कितना आरक्षित भंडार रहना चाहिए। इस समिति के सदस्यों के बारे में सरकार और रिजर्व बैंक दोनों मिलकर फैसला करेंगे।

रिजर्व बैंक का पूंजी आधार अभी 9.69 लाख करोड़ रुपये है। उसके स्वतंत्र निदेशक और आरएसएस के करीबी स्वदेशी विचारक एस. गुरुमूर्ति तथा वित्त मंत्रालय चाहते हैं कि इस कोष को वैश्विक मानकों के अनुरूप घटाया जाना चाहिए। विशेषज्ञ समिति इस कोष के उचित स्तर के बारे में अपनी सिफारिश देगी। सिस्टम में लिक्विडिटी यानी नकदी की कमी दूर करने के लिए 8 हजार करोड़ रुपये की राशि जारी करने का फैसला लिया गया। आरबीआई सरकारी सिक्योरिटीज की खरीद के जरिए इस रकम को सिस्टम में डालेगा। लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) को कर्ज देने की नई नीति बनाने पर भी सहमति बनी। इसके तहत एमएसएमई के लिए 25 करोड़ रुपये तक का लोन स्वीकृत हो सकेगा। बैंकों की त्वरित सुधारात्मक कार्रवाई के मामले में यह तय किया गया कि इस मुद्दे को रिजर्व बैंक का वित्तीय निरीक्षण बोर्ड देखेगा। सार्वजनिक क्षेत्र के 21 में से 11 बैंक पीसीए फ्रेमवर्क के तहत लाए गए हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि रजामंदी के इन कदमों के बाद रिजर्व बैंक की यह शिकायत दूर हो जाएगी कि सरकार उसके कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप कर रही है और सरकार की यह धारणा भी धूमिल पड़ेगी कि रिजर्व बैंक उसके सुधार कार्य में बाधा बन रहा है। हालांकि, विशेषज्ञ समिति के गठन की बात कुछ अजीब लगती है क्योंकि रिजर्व बैंक खुद ही विशेषज्ञों की संस्था है।

बहरहाल, इस समिति के सदस्यों के चयन पर कोई बखेड़ा नहीं होना चाहिए। कुछ अनसुलझे मुद्दे अभी बचे हैं जैसे एनबीएफसी का मामला लेकिन सबसे बड़ा संकट आपसी विश्वास का है। आरबीआई के निदेशक मंडल में दो गुट बन गए हैं जिनमें एक सरकार को तात्कालिक लाभ पहुंचाना चाहता है तो दूसरा अर्थव्यवस्था को दूरगामी नजरिए से देखता है और उसे अर्थशास्त्र के स्थापित नियमों से चलाना चाहता है। इन दोनों समूहों में टकराव से स्थिति बेकाबू होती हुई लगने लगी थी। रिजर्व बैंक और सरकार में असहमति स्वाभाविक है पर किसी भी स्वायत्त संस्थान को ऐसा नहीं लगना चाहिए कि सरकार उसे अपनी कठपुतली की तरह चलाना चाह रही है। इससे उसका मनोबल कमजोर होता है और समाज में यह संदेश जाता है कि सरकार का जनतंत्र और पारदर्शिता में भरोसा कम है। सच्चाई यह है कि सरकार और रिजर्व बैंक का मकसद एक ही है- अर्थव्यवस्था को संभावित संकटों से बचाते हुए विकास की रफ्तार तेज रखना। इस काम को दोनों आपसी समझदारी से अंजाम दें, इसी में देश का फायदा है।

मालगाड़ियों के विशेष गलियारे से बदलेगा देश के लॉजिस्टिक्स का चेहरा: प्रभु

नई दिल्ली (आरएनएस)। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री सुरेश प्रभु ने देश के भविष्य के लिए लॉजिस्टिक्स की सफलता को महत्त्वपूण बताते हुये आज कहा कि माल ढुलाई के लिए बनाये जा रहे विशेष रेल गलियारों से देश के लॉजिस्टिक्स का चेहरा पूरी तरह बदल जायेगा।

प्रभु ने चार्टर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ लॉजिस्टिक्स एवं ट्रांसपोर्ट (सीआईएलटी) द्वारा यहाँ आयोजित एक कार्यक्रम में कहा लॉजिस्टिक्स की सफलता भारत का भविष्य निर्धारित करेगी। समय और लागत के मामले में किफायती लॉजिस्टिक्स से देश में माल परिवहन सस्ता होगा और इसमें समय की बचत होगी। विकास की अगली धारा का सृजन आपूर्ति श्रृंखला से होगा। हम एकीकृत लॉजिस्टिक्स योजना तैयार कर रहे हैं। मंत्री ने कहा कि मालगाड़ी अपने गंतव्य पर कब पहुँचेगी इसके बारे में सिर्फ भगवान ही बता सकते थे क्योंकि मालगाड़ियों के लिए कोई समय-सारणी नहीं होती थी, लेकिन मौजूदा सरकार के इनका परिचालन भी समय-सारणी के आधार पर शुरू किया है। उन्होंने कहा विशिष्ट माल ढुलाई गलियारे भारत में लॉजिस्टिक्स का चेहरा पूरी तरह से बदलने वाले हैं। यदि माल के समय पर पहुँचने की गारंटी नहीं होगी तो कोई भी ग्राहक क्यों रेलगाड़ी से अपना सामान भेजेगा।

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष अश्विनी लोहानी ने बताया कि माल ढुलाई के लिए पूर्वी और पश्चिमी गलियारे मार्च 2020 तक बनकर तैयार हो जायेंगे तथा भविष्य में तीन और गलियारे तैयार करनी की योजना है। ये हैं - उत्तर-दक्षिण गलियारा, पूर्व-दक्षिण गलियारा और पूर्व-पश्चिम गलियारा। उन्होंने कहा कि भारतीय रेल मिश्रित यातायात के पुराने मॉडल से अब विशिष्ट गलियारों के मॉडल की ओर बढ़ रहा है।

एयर कार्गो सेक्टर के लिए खास पॉलिसी लाएगी सरकार

नई दिल्ली (आरएनएस)। एयर पैसेंजर्स के लिए रीजनल कनेक्टिविटी बढ़ाने की स्कीम के बाद सरकार दूरदराज के इलाकों के लिए कार्गो फ्लाइट्स को बढ़ावा देने की तैयारी कर रही है। एविएशन मिनिस्ट्री के एक अधिकारी ने बताया, रीजनल कार्गो फ्लाइट्स बढ़ाने के लिए रीजनल फ्लाइट्स की तर्ज पर वायाबिलिटी गैप फंडिंग (वीजीएफ) की घोषणा की जा सकती है। हम रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम को उड़ान स्कीम के तहत जोड़ने पर भी विचार कर रहे हैं।

अधिकारी ने कहा कि नई लॉजिस्टिक्स और कार्गो पॉलिसी के तहत कार्गो फ्लाइट्स की स्कीम को अंतिम रूप देने के लिए स्टडी की जाएगी। उड़ान स्कीम के तहत सरकार ने देश में ऐसे स्थानों के लिए फ्लाइट्स शुरू करने पर प्रोत्साहन दिया है, जहां पहले हवाई यात्रा की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। इसके लिए प्रति घंटे 2,500 रुपये का किराया तय किया गया है। एयरलाइंस को इन फ्लाइट्स के लिए सब्सिडी की पेशकश की जा रही है। देश के एविएशन मार्केट में पैसेंजर्स की संख्या के साथ ही कार्गो सेगमेंट में भी डबल-डिजिट ग्रोथ हो रही है। इसके मद्देनजर एयरपोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एएआई) एक अलग कार्गो सब्सिडियरी शुरू कर रही है। एएआई के डेटा के अनुसार, भारतीय एयरपोर्ट्स के जरिए ले जाया गया फ्रेट 2017-18 के फाइनेंशियल ईयर के दौरान 12.7 पर्सेंट बढ़ा है। इंटरनेशनल कार्गो में 15.6 पर्सेंट और डोमेस्टिक कार्गो में 8 पर्सेंट की वृद्धि रही। स्पाइसजेट जैसी एयरलाइंस के फ्रेट ले जाने वाला एयरक्राफ्ट लॉन्च करने और इंडिगो के अपने विमानों के पिछले हिस्से में जल्द खराब होने वाली वस्तुओं को ले जाने के फैसले से डोमेस्टिक कार्गो में बड़ी बढ़ोतरी हो सकती है।

दिल्ली में 76 रुपये लीटर से नीचे आया पेट्रोल, डीजल भी 71 से कम

नई दिल्ली (आरएनएस)। पेट्रोल और डीजल के दाम में एक दिन की स्थिरता के बाद गुरुवार को फिर गिरावट दर्ज की गई। देश की राजधानी दिल्ली में पेट्रोल का भाव 76 रुपये लीटर से नीचे आ गया है। वहीं, डीजल 71 रुपये लीटर से नीचे के दाम पर वाहन चालकों को मिलने लगा है।

दिल्ली में पेट्रोल के दाम में 41 पैसे और डीजल में 30 पैसे प्रति लीटर की कटौती दर्ज की गई है। वहीं, कोलकाता में पेट्रोल 40 पैसे प्रति लीटर सस्ता हुआ है तो डीजल 30 पैसे प्रति लीटर। मुंबई और चेन्नई में पेट्रोल के दाम में क्रमशः 40 पैसे और 43 पैसे प्रति लीटर की कटौती दर्ज की गई, जबकि दोनों महानगरों में 32 पैसे प्रति लीटर कमी आई।

इंडियन ऑयल की वेबसाइट के अनुसार, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नई में गुरुवार को पेट्रोल के भाव क्रमशः 75.97 रुपये, 77.93 रुपये, 81.50 रुपये और 78.88 रुपये प्रति लीटर दर्ज किए गए। चारों महानगरों में डीजल की कीमतें क्रमशः 70.97 रुपये, 72.83 रुपये, 74.34 रुपये और 74.99 रुपये प्रति लीटर दर्ज की गई।

इंस्टाग्राम एप में बदलाव को लेकर परीक्षण जारी

सैन फ्रांसिस्को (आरएनएस)। फेसबुक के स्वामित्व वाला फोटो मैसेजिंग एप इंस्टाग्राम अपने प्लेटफॉर्म पर फीचर्स, आइकन, बटन में बदलाव का परीक्षण कर रहा है। कंपनी ने बुधवार को एक ब्लॉग में लिखा, आपको खुद को बेहतर तरीके से जाहिर कराने और लोगों से आसानी से जोड़ने के लिए हम परीक्षण कर रहे हैं। अगले कुछ सप्ताह में आपको अुनी प्रोफाइल के फीचर्स में बदलाव नजर आ सकता है।

महिला विश्व कप : फाइनल में जगह बनाने के लिए इंग्लैंड से भिड़ेगा भारत

एंटिगा (आरएनएस)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम पहली बार टी-20 विश्व कप के फाइनल में जगह बनाने के लिए सेमीफाइनल में इंग्लैंड का सामना करेगी।

भारत ने 2010 के बाद से पहली बार टी-20 विश्व कप सेमीफाइनल में जगह बनाई है। अब हरमनप्रीत कौर की कप्तानी वाली भारतीय टीम की कोशिश इस मौके को भुनाते हुए पहली बार फाइनल में प्रवेश कर खिताब अपने नाम करने की होगी।

भारत ने एक भी बार टी-20 विश्व कप का फाइनल नहीं खेला है और टीम इस बार यह इतिहास रचने के लिए प्रतिबद्ध दिख रही है। वहीं इंग्लैंड 2009 में आयोजित विश्व कप के पहले संस्करण का खिताब अपने नाम कर चुकी है जबकि 2012 और 2014 में दो बार उसे आस्ट्रेलिया ने खिताब जीतने से रोक दिया था।

भारतीय टीम के प्रदर्शन को देखते हुए लग रहा है कि उसका विजेता बनना संभव भी है। हालांकि बल्लेबाजी में भारत को थोड़ी चिंता है क्योंकि ऊपरी क्रम के अलावा अभी तक चारों मैच में मध्यक्रम और निचला क्रम विफल रहा है।

आज का राशिफल

मेष: तन-मन में स्फूर्ति और ताजगी का अनुभव करेंगे। पारिवारिक वातावरण खुशहाल रहेगा। मित्रों और सेहीजनों के साथ आनंद में समय व्यतीत होगा। माता की तरफ से लाभ होगा। धन लाभ, उत्तम भोजन से आनंदित होंगे।

वृषभ: स्वास्थ्य नरम रहेगा। घर-परिवार और आर्थिक चिंता रह सकती है। वाणी और क्रोध पर काबू रखें नहीं तो परेशानी होगी। परिश्रम व्यर्थ होता हुआ प्रतीत होगा। गलतफहमी से बचने की गणेशजी की सलाह है।

मिथुन: परिवार में खुशी और आनंद का माहौल रहेगा। नौकरी-धंधे में आपको लाभ का समाचार मिलेगा। पदाधिकारीगण आपके कार्यों की प्रशंसा करेंगे। वैवाहिक योग है। स्त्री मित्रों से विशेष लाभ होगा।

कर्क: घर की साज-सजावट पर विशेष ध्यान देंगे। आजीविका के क्षेत्र में लाभ और प्रगति का योग है। पारिवारिक सुख-शांति बनी रहेगी। सरकारी क्षेत्र में लाभ मिलेगा। आपकी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक लाभ होगा।

सिंह: गणेशजी कहते हैं कि स्वभाव में उग्रता और क्रोध रहने के कारण काम करने में मन नहीं लगेगा। वाद-विवाद में अपने अहं के कारण किसी की नाराजगी झेलनी पड़ेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। कार्यक्षेत्र में अवरोध आ सकता है।

कन्या: आज नए कार्य हाथ में लेना हितकर नहीं है। बाहर के खान पान से स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। धन खर्च अधिक होगा। आंख मूंदकर किसी पर भरोसा ना करें।

तुला: प्रणय, रोमांस, मनोरंजन और मौज-मस्ती से भरपूर आज का दिन है। सार्वजनिक जीवन में आप सम्मान प्राप्त करेंगे। यश और कीर्ति में वृद्धि होगी। साझेदारों के साथ लाभ की बात होगी।

वृश्चिक: निर्धारित काम में सफलता मिलेगी। नौकरी में साथी कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। प्रतिस्पर्धियों और शत्रुओं की चाल असफल होगी। ननिहाल पक्ष की ओर से लाभ होगा। आर्थिक लाभ मिलेगा। कार्य में खर्च होगा।

धनु: कार्य में असफलता से निराशा होगी और आप क्रोधित होंगे। पेट सम्बंधी बीमारियों से परेशानी होगी। वाद-विवाद या चर्चा में पड़ने से समस्या पैदा होगी। संतानों के मामले में चिंता हो सकती है। धन प्राप्ति के लिए अनुकूल दिन है।

मकर: माता का स्वास्थ्य चिंता पैदा कर सकता है। सार्वजनिक जीवन में मान-सम्मान का ध्यान रखते हुए काम करें। पर्याप्त आराम और नींद न मिलने से स्वास्थ्य खराब होगा। ताजगी तथा स्फूर्ति का अभाव रह सकता है।

कुंभ: आज स्वस्थ और उत्साहित रहेंगे। पड़ोसियों और भाई बहनों के साथ अधिक मेल-मिलाप रहेगा। घर में मित्रों और सेहियों का आगमन आनंददायी होगा। प्रवास होने की संभावना है।

मीन: आज क्रोध और जीभ पर संयम रखें। किसी के साथ तकरार होने की आशंका है। आर्थिक मामले या लेन-देन में सावधानी रखें। परिवार के सदस्यों के साथ विवाद हो सकता है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन सूर्योदय से पहले करें गंगा स्नान, हरि-हर की बनी रहेगी विशेष कृपा

इस बार कार्तिक पूर्णिमा 2018, 23 नवंबर को है। इस दिन गंगा स्नान करने से व्यक्ति के सभी पाप भी धुल जाते हैं। जानिए पूजा और नहान का महत्व. वैसे तो कार्तिक माह में गंगा स्नान शरद पूर्णिमा से ही शुरू हो जाती है, लेकिन एक माह तक जो गंगा स्नान नहीं कर पाते, वे कार्तिक पूर्णिमा वाले दिन गंगा स्नान जरूर करते हैं।कार्तिक पूर्णिमा के दिन सर्योदय होन से पहले स्नान करके भगवान विष्णु की पूजा करें। इस दिन व्रत रखे से विशेष फल मिलता है। साथ ही ब्राह्मणों को दान

भी देना चाहिए। पूर्णिमा तिथि 22 नवंबर को दोपहर से अगले दिन 23 नवंबर को सुबह 10ः52 तक रहेगी। इस दिन घर में हवन या यज्ञ करवाने से भगवान विष्णु की विशेष कृपा मिलती है। एक अन्य कथा के अनुसार, कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरारी पूर्णिमा भी कहते हैं। इसी दिन भगवान भोलेनाथ ने त्रिपुरासुर नामक राक्षस का अंत किया था। राक्षस के अंत के बाद महादेव की पूजा त्रिपुरारी के रूप में होने लगी। मान्यता है कि इस दिन कृतिका नक्षत्र में भगवान भोलेनाथ के दर्शन मात्र से व्यक्ति सात जन्मों तक धनी और ज्ञानी होता है। इस दिन चंद्रमा जब आकाश में उदित हो रहा हो ठीक उसी समय शिवा, संभूति, संतति, प्रीति, अनुसूया और क्षमा इन कृतिकाओं का पूजन करने से भोले भंडारी प्रसन्न होते हैं।

टाटा फुटबाल अकादमी का एटलेटिको मेड्रिड के साथ करार

नई दिल्ली (आरएनएस)। देश में जमीनी स्तर पर फुटबाल को बढ़ावा देने और युवाओं को इस खेल के प्रति आकर्षित करने के लिए टाटा फुटबाल अकादमी (टीएफए) और टाटा ट्रस्ट ने स्पेनिश क्लब एटलेटिको डी मेड्रिड के साथ एक करार पर हस्ताक्षर किया है। बुधवार को हुए इस करार के तहत अब टीएफए टाटा एटलेटिको फुटबाल अकादमिया के नाम जाना जाएगा। इसके अलावा स्पेनिश क्लब टीएफए को पूर्णकालिक कोच उपलब्ध कराएगी। कोच का काम एटलेटिको मेड्रिड के तर्ज पर ही टाटा एटलेटिको फुटबाल अकादमियों में आधारिक सरंचना और पाठयक्रम पर काम करना है।

घर में बनाएं स्वादिष्ट- बैंगन भर्ता

बैंगन का भर्ता रोटी और चावल दोनों के ही साथ बहुत अच्छा लगता है। बच्चों को अगर बैंगन की सब्जी पसंद नहीं आती तो उन्हें भर्ता बनाकर खिलाएं। जानेंगे इसकी ईज़ी रेसिपी के बारे में।

सामग्री- बैंगन- 1 बड़ा, प्याज- 2 मीडियम, हरी मिर्च 3-4, अदरक- 1ड्ड इंच का टुकड़ा, टमाटर- 2 मीडियम (कटे हुए), तेल 3-4 बड़ा चम्मच, जीरा ड्ड छोटा चम्मच, हींग- 2 चुटकी, लाल मिर्च पाउडर- ड्ड छोटा चम्मच, हल्दी पाउडर- द छोटा चम्मच, धनिया पाउडर- 2 छोटा चम्मच, मेथी पाउडर- ड्ड छोटा चम्मच, नमक- स्वादानुसार, गरम मसाला- ड्ड छोटा चम्मच, कटी हरा धनिया- 2-3 बड़ा चम्मच

विधि- बैंगन को धोकर पोंछ लें। बैंगन के डंठल को काटें नहीं क्योंकि इससे भूनते समय बैंगन को पकड़ना आसान रहता है। अब इसको मीडियम आंच पर अच्छे से भून लें। भूनने के बाद बैंगन में चाकू अंदर डालकर देख लें कि वो पक गया है या नहीं। ठंडा होने के बाद इसे छील लें। प्याज और अदरक को छीलकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। आप चाहें तो इन्हे लंबा और पतला काट भी सकती हैं। अब कड़ाही में तेल गरम करें, जब तेल गरम हो जाए तो इसमें जीरा डालें फिर हींग। अब कटी हुई प्याज डालकर उसे सुनहरा होने तक भून लें। अब इसमें कटी अदरक और हरी मिर्च डालकर भून लें। अब इसमें कटी टमाटर, पिसी लाल मिर्च, हल्दी, पिसी धनिया, मेथी पाउडर, और नमक डालकर अच्छे से भूनें जब तक मसाला तेल न छोड़ दें।

शब्द सामर्थ्य-95

बाएं से दाएं
1. अभिमान, घमंड, अनुमान 4. बादल, मेघ, जलद (सं) 6. अधिकार वाला, अधिकारी 8. गति, सामंजस्य, समा जाना 10. कारावास, जेल 11. जोर, शक्ति, जान, सांस 12. राजाओं के रहने का भवन 15. मालामाल, अमीर, धनवान 18. नाव खेने का यंत्र 20. 'खन' ध्वनि उत्पन्न होना, पायल आदि का शब्द करना 21. मार डाला हुआ, घायल किया हुआ 22. हमेशा, आवाज 23. आग की लपट, ज्वाला 24. झगड़ा, तकरार 25. हीरा।

ऊपर से नीचे
1. दोषी, अपराधी 3. ताश में नौ अंक वाला पत्ता 4. झंडा, पताका 5. गहरा कीचड़, पंक 7. बूंद, अंश 9. मृत्यु के देवता 13. संसार, दुनिया, जग 14. हुजूर, जनाब, सम्मान सूचक एक शब्द (उ.) 16. सच्चा, धर्मनिष्ठ, ईमानवाला 17. अनूठा, बांका, अनुपम, छैला 18. आश्रय, शरण 19. साधुवाद, प्रशंसा 20. पटवारी की ऐसी बही जिसमें खेत संबंधी अनेक बातें लिखी जाती है, एक प्रकार का दानेदार संक्रामक रोग 23. गम, मातम, दुख।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 94 का हल

स्मृ	ति	■	पा	व	क	■	बे	ल
■	र	ज	नी	च	र	■	■	टूटू
मु	स्का	न	■	न	म	की	न	■
सा	र	■	स	■	■	ट	ख	ना
फि	■	अ	जा	य	ब	■	रा	जा
र	च	ना	■	था	ल	■	■	य
■	■	धि	■	र्थ	■	स	मा	ज
उ	प	कृ	त	■	आ	वा	ज	■
ल्लू	■	त	■	■	ब	ल	रा	म

सू-दोकू-95

	7			4		3		
2			3			9		4
	6			2				
3		1			7		4	
	2			1			6	
8			9		4			1
		2		3		7		
1			7		2	4		3
	5	3		8			7	2

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.94 का हल

9	2	8	3	1	5	7	4	6
4	1	6	8	9	7	2	5	3
7	3	5	4	6	2	8	1	9
2	7	3	9	8	1	4	6	5
5	4	1	6	7	3	9	2	8
6	8	9	2	5	4	1	3	7
3	6	2	7	4	9	5	8	1
8	5	7	1	2	6	3	9	4
1	9	4	5	3	8	6	7	2